श्री शिव चालीसा

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल श्री शिव चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।

www.temples.bio/s-18

॥ दोहा ॥
जय गणेश गिरिजासुवन मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम दे–उ अभय वरदान ॥

जय गिरिजापति दीनदयाला ।
सदा करत संतन प्रतिपाला ॥1॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुण्डल नाग फनी के ॥2॥

अंग गौर शिर गंग बहाये ।
मुण्डमाल तन क्षार लगाये ॥3॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ।
छवि को देखि नाग मन मोहे ॥4॥

मैना मातु की हवे दुलारी ।
वाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥5॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥6॥

नन्दी गणेश सोहैं तहं कैसे ।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥7॥
कार्तिक श्याम और गणरा–ऊ ।
या छवि कौ कहि जात न का–ऊ ॥8॥

देवन जबहीं जाय पुकारा ।
तबहिं दुख प्रभु आप निवारा ॥9॥
किया उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिलि तुम्हिं जुहारी ॥10॥

तुरत षडानन आप पठायौ ।
लव निमेष महं मारि गिरायौ ॥11॥
आप जलंधर असुर संहारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥12॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचायी ।
तबहिं कृपा कर लीन बचायी ॥13॥
किया तपहिं भागीरथ भारी ।
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥14॥

दानिन महं तुम सम को-उ नाहीं ।
सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥15॥
वेद माहि महिमा तुम गायी ।
अकथ अनादि भेद नहीं पायी ॥16॥

प्रकटे उदधि मंथन में ज्वाला ।
जरत सुरासुर भे विहाला ॥17॥
कीन्ह दया तहं करी सहायी ।
नीलकण्ठ तब नाम कहायी ॥18॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हां ।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥19॥
सहस कमल में हो रहे धारी ।
कीन्ह परीक्षा तबहिं त्रिपुरारी ॥20॥

एक कमल प्रभु राखे-उ जोयी ।
कमल नयन पूजन चहं सोयी ॥21॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर ॥22॥
जय जय जय अनंत अविनाशी ।
करत कृपा सबके घट वासी ॥23॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं ।
भ्रमत रहौं मोहे चैन न आवैं ॥24॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।
यह अवसर मोहि आन उबारो ॥25॥

ले त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
संकट से मोहिं आन उबारो ॥26॥
मात पिता भ्राता सब कोई ।
संकट में पूछत नहीं कोई ॥27॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।
आय हरहु मम संकट भारी ॥28॥
धन निर्धन को देत सदा ही ।
जो कोई जाँचै सो फल पाहीं ॥29॥

अस्तुति केहि विधि करों तुम्हारी ।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥30॥
शंकर हो संकट के नाशन ।
मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥31॥

Temples.bio

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं ।
शारद नारद शीश नवावैं ॥32॥
नमो नमो जय नमः शिवाय ।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥33॥

जो यह पाठ करे मन लायी ।
ता पर होत हैं शम्भु सहायी ॥34॥
रनियां जो कोई हो अधिकारी ।
पाठ करे सो पावन हारी ॥35॥

पुत्र होन की इच्छा जोयी ।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होयी ॥36॥
पंडित त्रयोदशी को लावे ।
ध्यान पूर्वक होम करावे ॥37॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ।
तन नहीं ताके रहै कलेशा ॥38॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥39॥

जन्म जन्म के पाप नसावे ।
अंत धाम शिवपुर में पावे ॥40॥
कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी ।
जानि सकल दुख हरहु हमारी ॥41॥

॥ दोहा ॥

नित नेम उठि प्रातः ही पाठ करो चालीस ।
तुम मेरी मनकामना पूर्ण करो जगदीश ॥

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल श्री शिव चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।
www.temples.bio/s-18